प्रेस विज्ञप्ति

आचार्यश्री महाश्रमण चातुर्मास – 2010

आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर 331 401

Email : terapanthpr@gmail.com * Fax : 01564-220 233

तेरापंथ भवन में प्रवचन

समाज में हितैषी की भावना हो – आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 19 जुलाई, 2010

आदमी समूह में रहता है, समूह में साधना करता है, जब उसे लगे अब मुझे सहायता देने वाला नहीं, अगर उसे अपने से बड़ा सहायक न लगे तो अकेला चलना चाहिए, मूर्ख या अज्ञानी आदमी का साथ नहीं करना चाहिए।

उक्त विचार आचार्यश्री महाश्रमण ने तेरापंथ भवन में सोमवार को आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए उत्तराध्ययन व धम्मपद के तुलनात्मक प्रवचन में व्यक्त किये।

आचार्यश्री महाश्रमण ने उत्तराध्ययन का उल्लेख करते हुए कहा कि जिस तरह धम्मपद में कहा गया है उसी तरह उत्तराध्ययन में कहा गया है कि कल्याण मित्र न मिले गुणों से बड़ा न मिले तो साधक अकेला चले और अपनी साधना करे। योग्य सहायक होता है तो वह विपत्ति में सहायता कर सकता है, अगर योग्य अज्ञानो है तो वह कठिनाई में भी डाल सकता हे, उन्होंने कहा कि आदमी स्वयं में सामर्थ्य का विकास करे जहां समाज है वहां हितैषी की भावना होनी चाहिए स्वार्थ की भावना नहीं होनी चाहिए जितना संभव हो सके पर कल्याण, अनुकंपा की चेतना का विकास करना चाहिए।

आचार्यश्री ने यह भी कहा कि संगति करो तो सज्जन व्यक्ति की करो, दुर्जन व्यक्ति की संगति नहीं करनी चाहिए और जहां भी रहे वहां सभी शांति, मैत्री के साथ रहें, काम, क्रोध से बचने का प्रयास करें, व्यक्ति के अवगुण दुर्जनता की ओर ले जाते हैं और सद्गुण सज्जनता की ओर ले जाते हैं। मनुष्य परिवार में रहता है तो उसे धन की भी आवश्यकता होती और धन प्राप्त करने के लिए वह व्यापार करता है किंतु धन के प्रति भी अति मोह अर्थात ज्यादा मोह की भावना न हो, ज्यादा मोह की भावना से आत्मा पवित्र नहीं रह सकती।

जीवन विज्ञान द्वारा व्यक्तित्व विकास प्रकल्प

सरदारशहर 19 जुलाई, 2010

आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में प्रेक्षाप्राध्यापक मुनि किशनलाल के निर्देशन में चलने वाले जीवन विज्ञान द्वारा व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन दिनांक 9 अगस्त से 13 अगस्त तक स्थानीय तेरापंथ भवन में किया जाएगा।

प्रेक्षा प्राध्यापक मुनि किशनलाल ने जानकारी देते हुए बताया कि प्रत्येक व्यक्ति विकास चाहता है किंतु वह केवल चाहने विकास नहीं हो सकता। विकास के सुव्यवस्थित प्लानिंग और प्रोग्राम चाहिए उसके लिए जीवन विज्ञान अकादमी ने जीवन विज्ञान द्वारा व्यक्तित्व विकास कार्यशाला की परिकल्पना की। इस परिकल्पना का उद्देश्य है कि जो व्यक्ति अपने शारीरिक, मानसिक भावात्मक विकास के प्रति सजग है अथवा होना चाहता है उन्हें प्रशिक्षण दिया जायेगा। जीवन क्या है? विकास के लिए क्या करणीय है? जीवन का उद्देश्य क्या है? उसको पूर्ण करने के लिए प्रशिक्षण प्राप्त कर विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं भावनात्मक विकास का सम्यक् नियोजन कर सकेंगे। मन को हर परिस्थिति में संतुलित रख सकते हैं, बौद्धिक विकास किया जा सकता है इसके साथ आवेश को संतुलित रख सकते हैं इस प्रकार अपने संपूर्ण व्यक्तित्व को विसिकत कर सके। शिक्षा में जीवन विज्ञान की शिक्षा ग्रहण करने से श्रेष्ठ व्यक्तित्व का निर्माण किया जा सकता है। जो व्यक्ति इस ट्रेनिंग के पश्चात इस कार्यक्रम को अपने जीवन का कैरियर बनाकर उसे संस्था से एक अनुबंध कर कार्यशालाओं को संचालित कर सकेगा।

– **शीतल बरड़िया** (मीडिया संयोजक)